PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

रस

- रस का शाब्दिक अर्थ है – आनन्द।
- भरतमुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में रस के स्वरूप को स्पष्ट किया था। रस की निष्पत्ति के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है–

  "विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।" अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इस प्रकार काव्य पढ़ने, सुनने या अभिनय देखने पर विभाव आदि के संयोग से उत्पन्न होने वाला आनन्द ही 'रस' है।
- साहित्य को पढ़ने, सुनने या नाटकादि को देखने से जो आनन्द की अनुभूति होती है, उसे 'रस' कहते हैं। रस के मुख्य रुप से चार अंग माने जाते हैं, जो निम्न प्रकार हैं

1. स्थायी भाव - हृदय में मूलरूप से विद्यमान रहने वाले भावों को स्थायी भाव कहते हैं। ये चिरकाल तक रहने वाले तथा रस रूप में सृजित या परिणत होते हैं।

- स्थायी भावों की संख्या नौ है-

स्थायी भाव	रस
1. रति	श्रृंगार
2. हास	हास्य
3. शोक	करूण
4. क्रोध	रौद्र
5. उत्साह	वीर
6. भय	भयानक
7. जुगुप्सा(घृणा)	वीभत्स
8. विस्मय	अद्भुत
9. निर्वेद(वैराग्य)	शांत

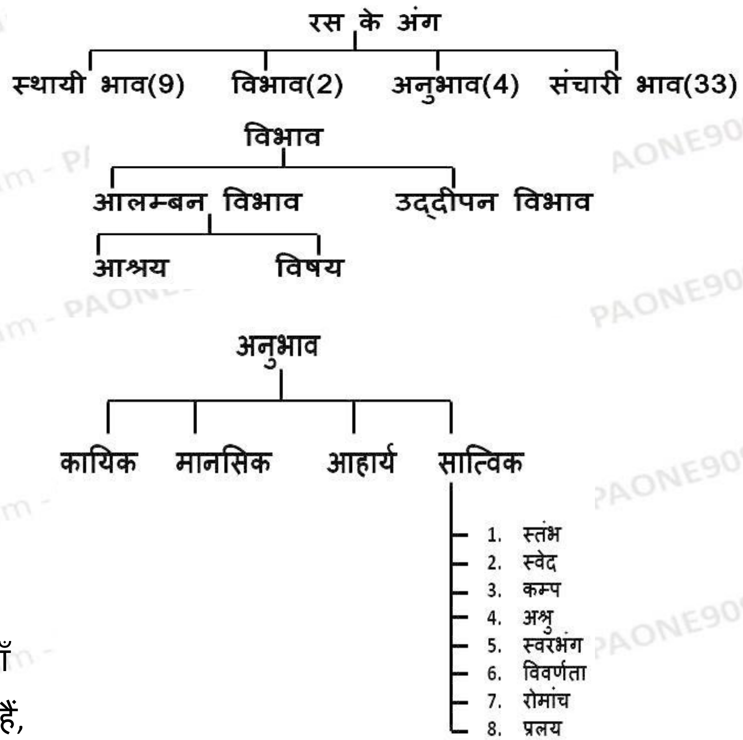

2. विभाव - जो व्यक्ति वस्तु या परिस्थितियाँ स्थायी भावों को उद्दीपन या जागृत करती हैं, उन्हें विभाव कहते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं-

(i) आलम्बन विभाव जिन वस्तुओं या विषयों पर आलम्बित होकर भाव उत्पन्न होते हैं, उन्हें आलम्बन विभाव कहते हैं;

जैसे- नायकनायिका।-

आलम्बन के भी दो भेद हैं-

(i) आश्रय - जिस व्यक्ति के मन में भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आश्रय कहते हैं।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

(ii) आलम्बन (विषय) -जिस वस्तु या व्यक्ति के लिए आश्रय के मन में भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आलम्बन या विषय कहते हैं।

(iii) उद्दीपन विभाव- स्थायी भाव को तीव्र करने वाले कारक उद्दीपक विभाव कहलाते है।

3. अनुभाव - आलम्बन तथा उद्दीपन के द्वारा आश्रय के हृदय में शीरीरकि व मानसित चेष्टाएँ उत्पन्न होती हैं, उन्हें अनुभाव कहते हैं। अनुभाव चार प्रकार के माने गए है - कायिक (शारीरिक चेष्टाये जैसे - इशारे, उच्छ्वास, कटाक्ष), मानसिक, आहार्य और सात्विका सात्विक अनुभाव की संख्या आठ है, जो निम्न प्रकार है-

1. स्तम्भ
2. स्वेद
3. रोमांच
4. स्वरभंग -
5. कम्प
6. विवर्णता (रंगहीनता)
7. अक्षु
8. प्रलय (संज्ञाहीनता)

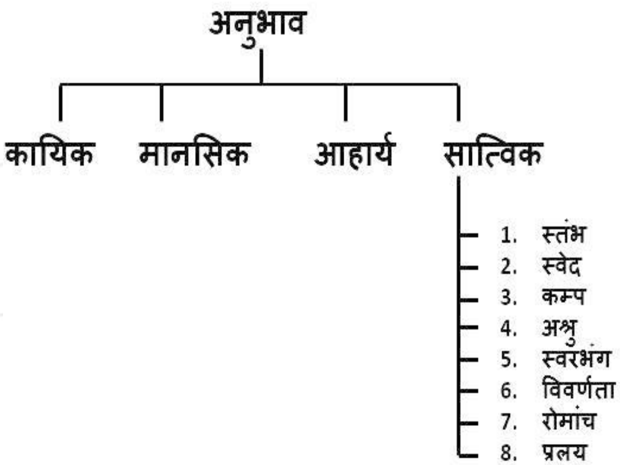

4. संचारी भाव (व्यभिचारी भाव)- आश्रय के चित्त में उत्पन्न होने वाले अल्पकालिक मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। इनके द्वारा स्थायी भाव और तीव्र हो जाता है।

- संचारी भावों की संख्या 33 है - हर्ष, विषाद, त्रास, लज्जा (व्रीड़ा), ग्लानि, चिन्ता, शंका, असूया, अमर्ष, मोह, गर्व, उत्सुकता, उग्रता, चपलता, दीनता, जड़ता, आवेग, निर्वेद, धृति, मति, विबोध, वितर्क, श्रम, आलस्य, निद्रा, स्वप्न, स्मृति, मद, उन्माद, अवहित्था, अपस्मार, व्याधि, मरण।
- आचार्य देव कवि ने 'छल' को चौतीसवाँ संचारी भाव माना है।

रस के प्रकार

- आचार्य भरतमुनि ने नाटकीय महत्त्व को ध्यान में रखते हुए आठ रसों का उल्लेख किया है। - श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स एवं अद्भुत।
- आचार्य मम्मट और पण्डितराज जगन्नाथ ने रसों की संख्या नौ मानी है - श्रृंगार, हास, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शान्त।
- आचार्य विश्वनाथ ने वात्सल्य को दसवाँ रस माना है।
- रूपगोस्वामी ने 'मधुर' नामक ग्यारहवें रस की स्थापना की, जिसे भक्ति रस के रूप में मान्यता मिली।
- वस्तुतः रस की संख्या 9 ही है।

1. श्रृंगार रस	5. रौद्र रस	9. शान्त रस
2. करूण रस	6. भयानक रस	10. वात्सल्य रस
3. हास्य रस	7. बीभत्स रस	11. भक्ति रस
4. वीर रस	8. अद्‌भुत रस	

- ध्यान दे - रस पढ़ते समय (वियोग तथा करूण रस), (रौद्र रस तथा भयानक रस), (वीर रस तथा रौद्र रस) में समानता दिखती है इसलिए ध्यानपूर्वक पढ़े।

1. श्रृंगार रस

- 'शृंगार' को 'रसराज' कहा जाता है। शृंगार रस का आधार स्त्रीपुरुष का पारस्परिक आकर्षण है-, जिसे काव्यशास्त्र में रति स्थायी भाव कहते हैं। जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रति स्थायी भाव उत्पन्न हो जाता है तो उसे श्रृंगार रस कहते हैं।
- स्थायी भाव – रति
- आलम्बन विभाव – नायक या नायिका
- उद्दीपन विभाव – नायिका के कुच, नितम्बादि अंग, एकान्त, वन-उपवन, चन्द्र-ज्यौत्स्ना, वसन्त, पुष्प, नायिका अथवा अनुभाव के चेष्टाएँ – हावभाव, तिरछी चितवन, मुस्कान।
- संचारी भाव – तैंतीस संचारियों में उग्रता, मरण, आलस्य, जुगुप्सा को छोड़कर शेष सभी संचारी भाव, मुख्यतः लज्जा, शर्म, चपलता।

शृंगार रस में सुखद और दुःखद दोनों प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं; इसी आधार पर इसके दो भेद किए गए हैं-

(i) संयोग शृंगार
(ii) वियोग श्रृंगार।

(i) संयोग श्रृंगार

- जहाँ नायक- नायिका का मिलन हो रहा हो, वहाँ संयोग शृंगार होगा।

जैसे -

1. देखन मिस मृग-बिहँग-तरु, फिरति बहोरि-बहोरि।
निरखि-निरखि रघुवीर-छवि, बाढी प्रीति न थोरि।।
देखि रूप लोचन ललचाने। हरखे जनु निज निधि पहिचाने।।
थके नयन रघुपति-छवि देखी। पलकन हू परहरी निमेखी।।
अधिक सनेह देह भइ भोरी। सरद-ससिहि जनु चितव चकोरी।।
लोचन-मग रामहिं उर आनी। दीन्हे पलक-कपाट सयानी।। तुलसी (रामचरितमानस)

रस - संयोग श्रृंगार   स्थायी भाव - रति   आश्रय - सीता

आलम्बन - राम उद्दीपन - वाटिका अनुभाव - स्तम्भ, नयनों

संचारी भाव - हर्ष, जड़ता

(ii) वियोग या विप्रलम्भ श्रृंगार

- जहाँ नायक- नायिका का बिछड़ाव हो, लेकिन मिलने की आशा हो, वहाँ वियोग या विप्रलम्भ शृंगार होगा।

  जैसे -

  1. "कहेउ राम वियोग तब सीता।
     मो कहँ सकल भए विपरीता।।
     नूतन किसलय मनहुँ कृसानू।
     कालसम निसि ससि भानू।।-निसा-
     कुवलय विपिन कुंत बन सरिसा।
     वारिद तपत तेल जनु बरिसा।।
     कहेऊ ते कछु दुःख घटि होई।
     काहि कहौं यह जान न कोई।।"

रस - वियोग श्रृंगार स्थायी भाव - रति आश्रय - सीता

आलम्बन - प्राकृतिक दृश्य उद्दीपन - कम्प, पुलक अनुभाव - अश्रु

संचारी भाव - विषाद, ग्लानि, चिन्ता, दीनता

  2. घडी एक नहिं आवडै, तुम दरसण बिन मोय।
     तुम हो मेरे प्राण जी, काँसू जीवन होय।।
     धान न भावै, नींद न आवै, विरह सतावे मोइ।
     घायल सी घूमत फिरुं रे, मेरो दरद न जाणै कोइ।। (मीरा)
  3. दर्द की मारी वन-वन डोलू, वैद्य मिल्या नहिं कोय।
     मीरा की तब पीर हटेगी, जब वैद संवरिया होय।। (मीरा)

2. करुण रस

- किसी प्रिय के न रहने पर उत्पन्न भाव, करुण रस कहलाता है।
- स्थायी भाव – शोक
- आलम्बन विभाव – प्रिय व्यक्ति का दुख, मृत शरीर, इष्टनाश।
- उद्दीपन विभाव – आलम्बन का रुदन, मृतक दाह, यादें, स्मरण।
- अनुभाव – अश्रुपात, विलाप, भाग्यनिन्दा, भूमिपतन, उच्छ्वास।
- संचारी भाव – निर्वेद्र, मोह, अपस्मार, व्याधि, ग्लानि, स्मृति, श्रम, विषाद, जड़ता, उन्माद।

जैसे -

1. “सोक विकल एब रोवहिं रानी।
रूप सील बल तेज बखानी।।
करहिं विलाप अनेक प्रकारा।
परहिं भूमितल बारहिं बारा।।”

रस - करुण रस | स्थायी भाव - शोक | आश्रय - रानियाँ
आलम्बन - दशरथ | उद्दीपन - राजा का रूप तेज बल | अनुभाव - रोना
संचारी भाव - स्मृति, मोह, उद्वेग कम्प

2. देखि सुदामा की दीन दसा करूना करि कै करुनानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैननि के जल सों पग धोये।।

3. प्रिय मृत्यु का अप्रिय महा संवाद पाकर विष-भरा।
चित्रस्थ-सी, निर्जीव सी, हो रह गयी हत उत्तरा।।

4. अभी ते मुकुट बंधा था माथ
हुए कल ही हल्दी के हाथ।
खुले भी न थे लाज के बोल
खिले भी न चुंबन शून्य कपोल।।

3. हास्य रस

- विकृत, आकार, वाणी, वेशभूषा, क्रियाकलाप, चेष्टा आदि से उत्पन्न हास्य, हास्य रस कहलाती है।
- स्थायी भाव – हास
- आलम्बन विभाव – हास्यास्पद वचन, विकृत वेश या विकृत कार्य
- उद्दीपन विभाव – अनुपयुक्त वचन, अनुपयुक्त वेश, अनुपयुक्त चेष्टा
- अनुभाव – मुख का फुलाना, हँसना, आँखें बन्द होना, ओठ नथूने आदि का स्फुरण।
- संचारी भाव – चापल्य, उत्सुकता, निद्रा, आलस्य, अवहित्था।

जैसे -

1. “जेहि दिसि बैठे नारद फूली।
सो दिसि तेहि न विलोकी भूली।।
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं।
देखि दसा हरिगन मुसकाहीं।।”

रस - हास रस | स्थायी भाव - शोक | आश्रय - दर्शक, श्रोता

आलम्बन - वानर रूप में नारद उद्दीपन - नारद की आंगिक चेष्टाएँ अनुभाव - दर्शको की हंसी
संचारी भाव - हर्ष, चपलता, उत्सुकता

2. आगे चना गुरु-मात दये तुम चाब लिए हमें नहिं दीन्हे।
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सों, चोरि की बानी मे हौजू प्रबीने।।

4. वीर रस

- कठिन कार्य को करने के लिए हृदय में निहित 'उत्साह' स्थायी भाव के जाग्रत होने के प्रभाव स्वरूप जो भाव उत्पन्न होता है, वीर रस कहलाता है।
- स्थायी भाव – उत्साह
- आलम्बन विभाव – शत्रु, शत्रु का उत्कर्ष।
- आश्रय – नायक (वीर पुरुष)।
- उद्दीपन विभाव – रिपु की गर्वोक्ति, मारु आदि राग, रणभेरी, रण कोलाहल।
- अनुभाव – अंग स्फुरण, रक्तिम नेत्र, रोमांच।
- संचारी भाव – हर्ष, धृति, गर्व, असूया आदि।

जैसे -

1. मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा जानो मुझे।
हे सारथे! हैं द्रोण क्या? आवें स्वयं देवेन्द्र भी।
वे भी न जीतेंगे समर में आज क्या मुझसे कभी।।

रस - वीर रस स्थायी भाव - उत्साह आश्रय - अभिमन्यु
आलम्बन - द्रोण आदि कौरव पक्ष उद्दीपन - नारद की आंगिक चेष्टाएँ
अनुभाव - अभिमन्यु के वचन संचारी भाव - गर्व, हर्ष, उत्सुकता, कम्प मद, आवेग, उन्माद

5. रौद्र रस

- किसी व्यक्ति के द्वारा देश, समाज या धर्म का अपमान या अपकार करने से उसकी प्रतिक्रिया में जो क्रोध उत्पन्न होता है,वहाँ रौद्र रस उत्पन्न होता है।
- स्थायी भाव – क्रोध
- आलम्बन विभाव – अपराधी व्यक्ति, शत्रु, विपक्षी, द्रोही, दुराचार।
- उद्दीपन विभाव – कटुवचन, शत्रु के अपराध, शत्रु की गर्वोक्ति।
- अनुभाव – नेत्रों का रक्तिम होना, त्यौरो चढ़ाना, ओठ चबाना।
- संचारी भाव – मद, उग्रता, अमर्ष, स्मृति, जड़ता, गर्व।

जैसे -

1. “माखे लखन कुटिल भयीं भौंहें।
   रदपट फरकत नयन रिसौहें।।-
   कहि न सकत रघुबीर डर, लगे वचन जनु बान।
   नाइ रामजुग-कमल-पद-, बोले गिरा प्रमान।।”

रस - रौद्र रस स्थायी भाव - क्रोध आश्रय - लक्ष्मण
आलम्बन - जनक के वचन उद्दीपन - जनक के वचनों की कठोरता
अनुभाव - भौंहें तिरछी होना, होंठ फड़कना संचारी भाव - अमर्ष, उग्रता, कम्प

2. श्री कृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे।
   सब शोक अपना भूलकर करतल-युगल मलने लगे।।

3. संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।
   करते हुए यह घोषणा वे हो गये उठकर खड़े।।

6. भयानक रस

- किसी भयानक वस्तु या घटना देखने /सुनने से भय का संचार होता है, तो वहाँ भयानक रस उत्पन्न होता है।
- स्थायी भाव – भय
- आलम्बन विभाव – बाघ, चोर, भयंकर वन, शक्तिशाली का कोप, भयानक दृश्य।
- उद्दीपन विभाव – आलम्बन की चेष्टाएँ, नीरवता, कोलाहल।
- अनुभाव – गिड़गिड़ाना, श्लथ होना, आँखें बन्द करना, स्वर भंग, पलायन, मूर्छा ।
- संचारी भाव – दैन्य, जड़ता, आवेग, शंका, चिन्ता आदि।

जैसे -

1. “एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय।
   विकल बटोही बीच ही, परयों मूरछा खाय।।”

यहाँ पथिक के एक ओर अजगर और दूसरी ओर सिंह की उपस्थिति से वह भय के मारे मूर्छित हो गया है।

रस - भयानक रस स्थायी भाव - भय आश्रय - यात्री
आलम्बन - अजगर और सिंह उद्दीपन - अजगर और सिंह की भयावह आकृतियाँ
अनुभाव - यात्री को मूर्छा आना संचारी भाव - आवेग, निर्वेद, दैन्य, शंका, व्याधि, त्रास, अपस्मार

7. बीभत्स रस

- जहाँ देखने व सुनने मे बहुत घिन (गंदगी) पैदा हो, वहाँ बीभत्स रस उत्पन्न होता है।
- स्थायी भाव – जुगुप्सा
- आलम्बन विभाव – घृणास्पद वस्तु या कार्य, माँस, रक्त, अस्थि, श्मशान, दुर्गन्ध।
- उद्दीपन विभाव – आलम्बन के कार्य, रक्त, माँस आदि का सङना, कुत्ते-गिद्ध आदि द्वारा शव नोंचना।
- अनुभाव – मुँह मोङना, नाक-आँख बंद करना, थूकना।
- संचारी भाव – मोह, असूया, अपस्मार, आवेग, व्याधि जङता आदि।

जैसे -

1. "सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत।
   खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनन्द उर धारत।।
   गीध जाँघ को खोदि खोदि के मांस उपारत।
   स्वान आंगुरिन काटिकाटि कै खात विदारत।।-"

यहाँ राजा हरिश्चन्द्र श्मशान घाट के दृश्य को देख रहे हैं।

रस - बीभत्स रस　　स्थायी भाव - जुगुप्सा / घृणा　　आश्रय - हरिश्चन्द्रं

आलम्बन - मुर्दे, मांस और श्मशान का दृश्य　उद्दीपन - गीध, स्यार, कुत्तों आदि का मांस नोचना

अनुभाव - इनके बारे मे सोचना　　संचारी भाव - मोह, ग्लानि, आवेग, व्याधि

8. अद्भुत रस

- अलौकिक, आश्चर्यजनक दृश्य या वस्तु को देखकर मन में स्थायी भाव अद्भुत रस उत्पन्न होता है।
- स्थायी भाव – विस्मय (आश्चर्य)
- आलम्बन विभाव – अलौकिक या आश्चर्यजनक वस्तु
- उद्दीपन विभाव – आलम्बन का गुण या कार्य।
- अनुभाव – रोमाँच, कँप, स्वेद, संभ्रम।
- संचारी भाव – वितर्क, भ्रान्ति, हर्ष, शंका, आवेग, मोह।

जैसे -

1. "अम्बर में कुन्तल जाल देख,
   पद के नीचे पाताल देख,
   मुट्ठी में तीनों काल देख,

मेरा स्वरूप विकराल देख,
सब जन्म मझी से पाते हैं,
फिर लौट मुझी में आते हैं।”

रस - अद्‌भुत रस | स्थायी भाव - विस्मय | आश्रय - कोई भी

आलम्बन - ईश्वर का विराट् स्वरूप | उद्दीपन - विराट् के अद्‌भुत क्रियाकलाप

अनुभाव - आँखें फाड़कर देखना, स्तब्ध, | संचारी भाव - भ्रम, औत्सुक्य, चिन्ता, त्रास

2. देख यशोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की माय।
क्षणभर को वह बनी अचेतन, हिल न सकी कोमल काया।।

9. शान्त रस(निर्वेद रस)

- संसार और जीवन की नश्वरता का बोध होने अथवा परमात्मा के वास्तविक ज्ञान प्राप्ति से चित्त में एक प्रकार का विराग उत्पन्न होता है, शान्त (निर्वेद) रस कहलाता है।
- स्थायी भाव – निर्वेद या वैराग्य
- आलम्बन विभाव – निर्वेद उत्पन्न करने वाली वस्तु, सांसारिक नश्वरता।
- उद्दीपन विभाव – सत्संग, पुण्याश्रम, तीर्थ, एकान्त।
- अनुभाव – रोमांच, दृढ़ता, कथन, चेतावनी, संकल्प।
- संचारी भाव – धृति, मोह, निर्वेद, हर्ष, विमर्श।
- आश्रय – ज्ञानी व्यक्ति।

जैसे -

1. देखी मैंने आज जरा।
हो जावेगी क्या ऐसी मेरी ही यशोधरा।
हाय मिलेगा मिट्टी में वह वर्ण-सुवर्ण खरा।
सूख जावेगा मेरा उपवन जो है आज हरा।

10. वात्सल्य रस

- छोटे बालको के प्रति माता-पिता व सम्बन्धी लोगो मे उत्पन्न होने वाला भाव, वात्सल्य रस कहलाता है।
- स्थायी भाव – वत्सलता या स्नेह
- आलम्बन विभाव – बच्चा (संतान)
- उद्दीपन विभाव – आलम्बन की चेष्टाएँ
- अनुभाव – स्नेह से देखना, आलिंगन, चुम्बन, पालने झुलाना।

- संचारी भाव – हर्ष, गर्व आदि।
- आश्रय – माता-पिता।

जैसे -

1. "किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
   मनिमय कनक नन्द के आँगन बिम्ब पकरिबे धावत।
   कबहुँ निरखि हरि आप छाँह को कर सो पकरन चाहत।
   किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ पुनि पुनि तिहि अवगाहत।।"

रस - वत्सल्य रस स्थायी भाव - वत्सल्य/स्नेह आश्रय - कोई भी
आलम्बन - कृष्ण की बाल सुलभ चेष्टाएँ उद्दीपन - किलकना
अनुभाव - रोमांचित होना, मुख चूमना संचारी भाव - हर्ष, गर्व, चपलता, उत्सुकता

11. भक्ति रस

- भक्ति रस शान्त रस से भिन्न है। शान्त रस जहाँ निर्वेद या वैराग्य की ओर ले जाता है वहीं भक्ति ईश्वर विषयक रति की ओर ले जाते हैं ईश्वर के प्रति उत्पन्न भाव भक्ति रस कहलाता है।
- स्थायी भाव – भगवद्विषयक रति
- आलम्बन विभाव – आराध्य देव, गुरुजन, इष्ट
- उद्दीपन विभाव – आराध्य या आलम्बन का रूप, उनके कार्य एवं लीलाएँ।
- अनुभाव – अश्रु, रोमांच, कंठावरोध, गद्गद् होना, नेत्र बंद होना।
- संचारी भाव – जगुप्सा, आलस्य आदि के अतिरिक्त सभी मुख्यतः हर्ष, आवेग, दैन्य, स्मरण।

जैसे -

1. "मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।
   जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।
   साधुन संग बैठि बैठि लोकलाज खोई।-
   अब तो बात फैल गई जाने सब कोई।।"

रस - भक्ति रस स्थायी भाव - निर्वेद/वैराग्य आश्रय - मीरा
आलम्बन - श्रीकृष्ण उद्दीपन - कृष्ण लीलाएँ, सत्संग
अनुभाव - रोमांच, अश्रु, प्रलय, संचारी भाव - हर्ष, गर्व, निर्वेद, औत्सुक्य